विचार बिन्दु

जो गरीबों पर दया करता है, वह अपने कार्य से ईश्वर को ऋणी बनाता है।

–बाइबल

हमारे पढ़ने-लिखने की सुविधा पर यह वज्राघात!

हम भारतीयों के जीवन में डाक व्यवस्था का बहुत महत्व रहा है। बॉलीवुड के गानों में 'डाकिया डाक लाया' और राजस्थानी लोक गीतों में 'डाक्या रे तू कागद लिख दे' जैसे गीत हमारे जीवन में इसकी ख़ास जगह को रेखांकित करते हैं। हममें से ज़्यादातर लोग भले ही इसके इतिहास से परिचित न हों, अपने बीते जीवन के बहुत बड़े हिस्से में हम सुबह-शाम (तब डाक दो समय बंटा करती थी) डाकिये का इंतज़ार करते रहे हैं। मशहूर शायर निदा फ़ाज़ली ने क्या खूब लिखा है - ''सीधा-सादा डाकिया जादू करे महान/ एक ही थैले में भरे आंसू और मुस्कान।'' डाकिये की बात करेंगे तो चिट्ठी का ज़िक्र भला कैसे नहीं आएगा? 1986 में बनी फ़िल्म 'नाम' में पंकज उधास के गाए एक गीत–''चिट्ठी आई है आई है आई है चिट्ठी आई है, बड़े दिनों के बाद वतन से चिट्ठी आई है....'' (आनंद बख़्शी) ने हर सुनने वाले की आंखों को नम किया है। हमें अपने जीवन की सारी अच्छी-बुरी ख़बरें चिट्ठी और डाक के माध्यम से ही मिली हैं। लेकिन आहिस्ता-आहिस्ता समय बदला और हमारे जीवन से डाक की अहमियत घटती चली गई। इसमें काफी बड़ा योगदान तकनीक का भी था। चिट्ठी की जगह ई मेल, और टेलीफ़ोन-मोबाइल ने ले ली। लम्बी और भावपूर्ण चिट्ठियों का ज़माना अतीत हुआ और उनकी जगह काम चलाऊ संदेशों और उनके बाद इमोजी ने ले ली। लेकिन डाक पूरी तरह हमारे जीवन से लुप्त नहीं हुई। क्या हुआ जो हमने किसी को चिट्ठी नहीं लिखी या किसी की चिट्ठी का इंतज़ार हमें नहीं रहा, किताबों पत्र-पत्रिकाओं के वाहक रूप में तो डाक व्यवस्था फिर भी हमारे लिए ज़रूरी बनी रही, और आगे भी बनी रहेगी।

भारतीय डाक विभाग की वेबसाइट पर उपलब्ध जानकारी के अनुसार हमारा डाक विभाग 1,56,600 डाकघरों के साथ विश्व का विशालतम डाक नेटवर्क है। इसकी शुरुआत 1727 में कलकत्ता में पहले डाकघर की स्थापना के साथ हुई थी। इसके बाद कुछ और डाकघर स्थापित हुए और फिर तत्कालीन डाकघरों में एकरूपता लाने के उद्देश्य से भारतीय डाकघर अधिनियम, 1837 बनाया गया। इसके बाद एक और अधिक व्यापक भारतीय डाकघर अधिनियम, 1854 बनाया गया। इस अधिनियम ने समूची डाक प्रणाली में सुधार किया। माना जाता है कि भारत में वर्तमान डाक प्रणाली इसी अधिनियम के साथ अस्तित्व में आई। डाक विभाग द्वारा प्रदत्त जानकारी के अनुसार (जो कुछ पुरानी है) भारत में एक डाकघर औसतन 8511 व्यक्तियों को सेवा प्रदान करता है और एक डाकघर द्वारा औसतन 20.99 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र की सेवा की जाती है।

डाक व्यवस्था का संचालन लाभ कमाने के उद्देश्य से नहीं किया जाता है। यह संचार और शिक्षा का एक सर्व सुलभ और कम खर्च वाला माध्यम है। चाहे बाद में टेलीफोन, मोबाइल, ईमेल और कूरियर जैसे अनेक वैकल्पिक माध्यम हमें सुलभ हो गए हों, आज भी सरकारी डाक माध्यम देश की बहुत बड़ी आबादी का एकमात्र संबल हैं। लेकिन जैसा देश के अन्य बहुत सारे कल्याणकारी कामों के साथ हो रहा है, हमारी सरकारें आहिस्ता-आहिस्ता इनसे अपने हाथ खींच रही हैं। इसके पीछे असल मकसद अपनी ज़िम्मेदारी से हटने का है या निजी क्षेत्र को बढ़ावा देने का, इस पर तो बहुत सारी चर्चाएं होती हैं और की जा सकती हैं, इस बात को नकारना संभव नहीं होगा कि चाहे शिक्षा हो, दूर संचार हो, चिकित्सा हो, पेयजल हो या डाक व्यवस्था हो हमने सार्वजनिक क्षेत्र को निजी क्षेत्र के हाथों पराजित होते हुए देखा है। अगर केवल डाक व्यवस्था की बात करें तो पहले दो समय बंटने वाली डाक को एक समय में और वह भी कभी-कभार तक सिमटते हुए हमने देखा है। हमारे डाकघर बदहाली और विपन्नता के नमूने हैं। डाकियों की भर्ती नहीं होने के कारण कार्यरत डाकियों के क्षेत्र में इतना विस्तार होता जा रहा है कि उस की सेवा करना उनके लिए नामुमकिन होता है। और जैसे इतना ही पर्याप्त न हो, सरकार अलग-अलग तरह से विद्यमान डाक सेवाओं पर भी कोड़े चला रही है।

डाक व्यवस्था का मज़बूत होना आवश्यक है, यह भी आवश्यक है उसकी दरें जनता की भुगतान क्षमता के अनुरूप हों। बल्कि दरें कम करके लोगों की पढ़ने-लिखने की रुचि को और बढ़ाया जा सकता है। अगर मुझे बहुत कम डाक व्यय में कोई किताब मिलेगी तो मैं उसे मंगवाने में तनिक भी नहीं झिझकूंगा, लेकिन अगर मुझे दो सौ रुपये मुद्रित मूल्य वाली किताब पर भी दो सौ सोलह रुपये डाक व्यय देना होगा तो क्या मैं उस किताब को मंगवाने की हिम्मत करूंगा?

ताज़ा प्रसंग यह है कि हमारे डाकघरों ने अब रजिस्टर्ड प्रिंटेड बुक्स के पैकेट लेना बंद कर दिया है। जिन्हें जानकारी न हो उन्हें बता दूं कि भारतीय डाक विभाग पोस्ट कार्ड, अंतर्देशीय पत्र और लिफाफों के रूप में चिट्ठियां भेजने के अतिरिक्त रजिस्टर्ड और अन रजिस्टर्ड पैकेट्स के रूप में मुद्रित पुस्तकें और पत्रिकाएं भेजने की सुविधा भी देता रहा है। इस सुविधा के चलते लगभग पचास साठ रुपये में पांच किलो तक वज़न की पुस्तकें आदि मुद्रित सामग्री भेजी जा सकती थी। यह सुविधा पढ़ने-लिखने वालों के लिए अत्यधिक उपयोगी थी। हम लोग किताबें पत्र-पत्रिकाएं आदि इसी सुविधा के अंतर्गत मंगाते-भेजते रहे हैं। यह सुविधा किसी व्यावसायिक हित के लिए नहीं अपितु शिक्षा और ज्ञान के प्रसार के लिए दी जाने वाली सुविधा है जो किसी भी समझदार सरकार का दायित्व है। कुछ समय पहले हमारी सरकार की नज़र इस सुविधा पर गई और उसने इस पर जीएसटी लगा कर इसे पचास साठ से बढ़ाकर पैंसठ-सत्तर रुपये तक पहुंचा दिया। यहीं यह बताता चलूं कि मुद्रित (प्रिंटेड) बुक्स वाली इस सुविधा में यह ज़रूरी था कि पैकेट को एक तरफ से खुला रखा जाए ताकि विभाग यह देख सके कि उसमें छपी हुई पुस्तकें ही हैं। लेकिन अब एक सरकारी आदेश से 17 नवंबर 2024 से रजिस्टर्ड प्रिंटेड बुक्स सर्विस और रजिस्टर्ड पैटर्न एण्ड सेंपल सर्विस - इन दोनों सेवाओं को समाप्त कर दिया गया है। इसी क्रम में रजिस्टर्ड बुक पैकेट का नाम बदल कर बुक पोस्ट कर दिया गया है। इस बदलाव का परिणाम यह हुआ है कि अब एक तरफ से खुले पैकेट में मुद्रित सामग्री भेजने की सुविधा ख़त्म हो गई है। अब अगर किसी को कोई किताब भी भेजनी है तो उसे बंद पैकेट में ही भेजा जा सकेगा और उसके लिए पहले से बहुत अधिक डाक व्यय खर्च करना होगा। अधिक का अनुमान इस बात से लगा लें कि पहले जो किताब पैंसठ सत्तर रुपये में भेजी जा सकती थी अब उसके लिए मात्र दो सौ सोलह रुपये खर्च करने होंगे। पांच सौ ग्राम तक के रजिस्टर्ड पार्सल पैकेट का न्यूनतम डाक व्यय भी अब छियालीस रुपये होगा। इसका आशय यह है कि एक पैम्फलेट भेजने के लिए भी छियालीस रुपये तो खर्च करने ही होंगे।

इस बदलाव का प्रतिकूल असर सीधे पढ़ने-लिखने वाले लोगों पर पड़ेगा। हमारे यहां पत्रिकाओं व पुस्तकों की सुलभता वैसे ही कम है। जिन्हें पढ़ने लिखने में रुचि है वे उन्हें प्राप्त करने के लिए डाक व्यवस्था पर ही निर्भर रहते हैं। डाक व्यय बढ़ने का उन पर क्या प्रभाव पड़ेगा - यह बताने की ज़रूरत नहीं है। इस बदलाव का सीधा शिकार वे छोटे प्रकाशक भी होंगे जो जैसे-तैसे करके ज्ञान और विचार का प्रसार करने में अपना यत्किंचित योगदान करते रहे हैं। उनके लिए यह बढ़ा हुआ व्यय भार वहन करना बहुत कठिन होगा।

एक जन कल्याणकारी सरकार से यह उम्मीद करना अनुचित नहीं है कि वह हर संभव प्रयास करके अपने नागरिकों का जीवन सुगम और बेहतर बनाए। जीवन सुगम बनाने के लिए जहां बिजली पानी सड़क जैसी सुविधाएं प्रदान की जाती हैं वहीं उसे बेहतर बनाने के लिए शिक्षा और संचार की सुविधाएं प्रमुख होती हैं। डाक व्यवस्था उन सुविधाओं में अग्रणी है। किताब और अन्य पाठ्य सामग्री आसानी से और कम खर्च करके एक से दूसरी जगह भेजी जा सके इसके लिए न केवल डाक व्यवस्था का मज़बूत होना आवश्यक है, यह भी आवश्यक है उसकी दरें जनता की भुगतान क्षमता के अनुरूप हों। बल्कि दरें कम करके लोगों की पढ़ने-लिखने की रुचि को और बढ़ाया जा सकता है। अगर मुझे बहुत कम डाक व्यय में कोई किताब मिलेगी तो मैं उसे मंगवाने में तनिक भी नहीं झिझकूंगा, लेकिन अगर मुझे दो सौ रुपये मुद्रित मूल्य वाली किताब पर भी दो सौ सोलह रुपये डाक व्यय देना होगा तो क्या मैं उस किताब को मंगवाने की हिम्मत करूंगा?

कहना अनावश्यक है कि सरकार का यह निर्णय सीधे हमारे पढ़ने के अधिकार पर कुठाराघात है। अगर आपकी भी रुचि पढ़ने लिखने में है, अगर आप भी चाहते हैं कि हम अज्ञान के अंधकार से निकल कर ज्ञान से आलोकित दुनिया में आएं तो हमें सरकार से उसके इस प्रतिगामी निर्णय पर पुनर्विचार करने का पुरज़ोर आग्रह करना चाहिए। सरकारें हर काम लाभ के लिए नहीं करती हैं। उसे बहुत सारे काम जन कल्याण को ध्यान में रखकर भी करने होते हैं। हम सबको उससे आग्रह करना चाहिए कि वह पुस्तकों आदि के प्रेषण के लिए बढ़ाई गई डाक दरों को वापस ले। केवल इतना ही नहीं, हमारा आग्रह डाक व्यवस्था को और अधिक दक्ष व बेहतर बनाने का भी होना चाहिए।

–अतिथि संपादक,
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल
(शिक्षाविद और साहित्यकार)

रूसी कैंसर वैक्सीन: एक नई उम्मीद?

अशोक कुमार

कैंसर एक ऐसी बीमारी है जिसमें शरीर की कोशिकाएं अनियंत्रित रूप से बढ़ने लगती हैं और फैलने लगती हैं। ये कोशिकाएं सामान्य कोशिकाओं की तुलना में बहुत तेजी से बढ़ती हैं और आसपास के स्वस्थ ऊतकों को नुकसान पहुंचा सकती हैं।

भारत में कैंसर एक गंभीर स्वास्थ्य चुनौती है। देश की बढ़ती आबादी और बदलते जीवनशैली के कारण कैंसर के मामलों में लगातार वृद्धि हो रही है। भारत में सबसे आम कैंसर के प्रकारों में फेफड़े का कैंसर, मुंह का कैंसर, पेट का कैंसर और स्तन कैंसर शामिल हैं। इन कैंसरों के प्रमुख कारणों में तंबाकू का सेवन, शराब का सेवन, अस्वस्थ आहार, शारीरिक गतिविधि की कमी और प्रदूषण शामिल हैं। तले हुए खाद्य पदार्थों, अधिक चीनी और वसा वाले खाद्य पदार्थों का सेवन कैंसर के खतरे को बढ़ा सकता है। नियमित व्यायाम न करने से मोटापा बढ़ता है जो कई प्रकार के कैंसर के खतरे को बढ़ाता है।वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण और ध्वनि प्रदूषण कैंसर के विकास में भूमिका निभा सकते हैं। कुछ प्रकार के कैंसर परिवारों में चल सकते हैं। कैंसर के उपचार के तरीके कैंसर के प्रकार, उसके चरण और व्यक्ति के समठा स्वास्थ्य पर निर्भर करते हैं। कुछ सामान्य उपचार विकल्पों में शामिल हैं: ट्यूमर को हटाने के लिए सर्जरी की जाती है। कैंसर कोशिकाओं को नष्ट करने के लिए दवाओं का उपयोग किया जाता है। विकिरण का उपयोग कैंसर कोशिकाओं को नष्ट करने के लिए किया जाता है। कैंसर कोशिकाओं में विशिष्ट परिवर्तनों को लक्षित करने वाली दवाओं का उपयोग किया जाता है। लेकिन अभी तक कैंसर रोग के निदान के लिए कोई वैक्सीन नहीं बन पायी है।

रूस ने हाल ही में कैंसर के इलाज के लिए एक नई वैक्सीन विकसित करने का दावा किया है। रूस के स्वास्थ्य मंत्रालय ने जानकारी दी है कि उसने कैंसर की वैक्सीन बनाने में सफलता हासिल कर ली है। रूसी न्यूज एजेंसी TASS के मुताबिक, इस वैक्सीन को अगले साल से रूस के नागरिकों को फ्री में लगाया जाएगा। कैंसर की ये वैक्सीन mRNA टेक्नोलॉजी पर आधारित है।

कैंसर जैसी घातक बीमारी के इलाज में रूस को बड़ी सफलता मिली है। रूस ने कैंसर के खिलाफ एक वैक्सीन बनाने में कामयाबी हासिल की है, और इसे सदी की सबसे बड़ी खोज के रूप में देखा जा रहा है। रूस के स्वास्थ्य मंत्रालय के रेडियोलॉजी मेडिकल रिसर्च सेंटर ने इस उपलब्धि की जानकारी साझा की है। रूसी न्यूज एजेंसी TASS के मुताबिक, यह वैक्सीन अगले साल से रूस के नागरिकों को मुफ्त में उपलब्ध कराई जाएगी।

यह वैक्सीन mRNA तकनीक पर आधारित है, जो कैंसर के खिलाफ अपनी तरह की पहली वैक्सीन है। mRNA वही तकनीक है, जिसने कोरोना वैक्सीन को मुमकिन बनाया था। रूसी अधिकारियों का कहना है कि 2025 की शुरुआत तक इस वैक्सीन को लॉन्च कर दिया जाएगा। मगर आखिर mRNA तकनीक क्या है, इससे जुड़े खतरे और फायदे क्या है।

mRNA तकनीक का मूल सिद्धांत

व्यक्तिगतकृत उपचार: mRNA वैक्सीन को प्रत्येक रोगी के ट्यूमर के विशिष्ट आनुवंशिक प्रोफाइल के आधार पर बनाया जाता है। mRNA जो कि कोशिकाओं को प्रोटीन बनाने के लिए निर्देश देता है, को इस तरह से डिजाइन किया जाता है कि शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली को कैंसर कोशिकाओं को पहचानने और उन पर हमला करने के लिए प्रेरित किया जा सके।

वैक्सीन निर्माण की प्रक्रिया

ट्यूमर बायोप्सी: सबसे पहले, रोगी के ट्यूमर का एक नमूना लिया जाता है।

आनुवंशिक विश्लेषण: इस नमूने का विस्तृत आनुवंशिक विश्लेषण किया जाता है ताकि ट्यूमर कोशिकाओं में मौजूद विशिष्ट उत्परिवर्तन (mutations) की पहचान की जा सके। इन उत्परिवर्तनों के आधार पर, एक विशेष प्रकार का mRNA डिजाइन किया जाता है। यह mRNA शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली को इन उत्परिवर्तनों को एक खतरे के रूप में पहचानने के लिए प्रेरित करता है। इस डिजाइन किए गए mRNA को एक वैक्सीन में शामिल किया जाता है। इस वैक्सीन को फिर रोगी को इंजेक्ट किया जाता है।

शरीर में क्या होता है?

जब वैक्सीन शरीर में प्रवेश करती है, तो शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली mRNA द्वारा कोडित प्रोटीन को एक विदेशी पदार्थ के रूप में पहचानती है। शरीर इस विदेशी पदार्थ के खिलाफ एंटीबॉडी उत्पन्न करता है। ये एंटीबॉडी कैंसर कोशिकाओं को ढूंढती हैं और उन पर हमला करती हैं, जिससे उनकी मृत्यु हो जाती है।

इस तकनीक के फायदे-

व्यक्तिगतकृत उपचार: प्रत्येक रोगी के लिए एक अद्वितीय वैक्सीन, जिससे उपचार अधिक प्रभावी हो सकता है। पारंपरिक कीमोथेरेपी की तुलना में कम दुष्प्रभाव। वैक्सीन केवल कैंसर कोशिकाओं को लक्षित करती है, स्वस्थ कोशिकाओं को नुकसान पहुंचाने की संभावना कम होती है।

चुनौतियाँ और भविष्य-

हालांकि यह तकनीक बहुत आशाजनक है, लेकिन अभी भी कुछ चुनौतियाँ हैं, जैसे कि: प्रत्येक वैक्सीन को व्यक्तिगत रूप से बनाया जाता है, जिससे इसकी लागत काफी अधिक हो सकती है। अभी तक इस तकनीक के दीर्घकालिक प्रभावों के बारे में पूरी तरह से जानकारी नहीं है।

जानकारी के मुताबिक इस वैक्सीन को कई रिसर्च सेंटर्स की मदद से विकसित किया गया है। ये वैक्सीन कैंसर के मरीजों के इलाज के लिए इस्तेमाल की जाएगी। रूस ने ये भी साफ किया है कि इस वैक्सीन को ट्यूमर बनने से रोकने के लिए आम जनता को मुहैया नहीं कराया जाएगा। मानें वैक्सीन का इस्तेमाल इलाज में किया जाएगा ना कि रोकथाम के लिए। रूस मे वैक्सीन के प्री-क्लिनिकल ट्रायल्स से पता चला है कि ये ट्यूमर को बढ़ने और संभावित मेटास्टेसिस को दबाता है। हालांकि अभी तक ये तय नहीं हुआ है कि इस वैक्सीन का नाम क्या होगा। इसके साथ ही ये भी क्लियर नहीं है कि वैक्सीन किस कैंसर के इलाज के लिए बनाया गई है। साथ ही ये कितनी प्रभावी है या रूस इसे किस तरह लागू करने की प्लानिंग कर रहा है, इसके बारे में भी जानकारी नहीं है।

निष्कर्ष:- mRNA तकनीक के द्वारा बनाई गई वैक्सीन कैंसर के उपचार में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। यह तकनीक कैंसर के रोगियों को अधिक प्रभावी और व्यक्तिगत उपचार प्रदान करने की क्षमता रखती है। हालांकि, इस तकनीक को व्यापक रूप से उपलब्ध कराने के लिए अभी भी कई चुनौतियों का सामना करना होगा। वैक्सीन के नाम पर अभी कोई मुहर नहीं।

–अशोक कुमार,
पूर्व कुलपति कानपुर, गोरखपुर
विश्वविद्यालय, विभागाध्यक्ष
राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर

नवोन्मेष फाउंडेशन के वैचारिक महाकुंभ ''टॉक फेस्ट'' का आयोजन

जयपुर। नवोन्मेष फाउंडेशन, जयपुर का वैचारिक महाकुंभ ''टॉक फेस्ट'' रविवार को आमेर के होटल में संपन्न हुआ। राज्यपाल हरिभाउ बागड़े ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया। चार सत्रों में सम्पन्न हुए कार्यक्रम का उद्घाटन राज्यपाल हरिभाऊ किसनराव बागड़े ने किया और उद्घाटन सत्र सक्सेस को संबोधित भी किया। इस सत्र की अध्यक्षता पूर्व सांसद रामचरण बोहरा ने की और संचालन नवोन्मेष के समन्वयक युगल किशोर शर्मा ने किया। इस अवसर पर एक प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया।

सनातन 2047 की थीम पर आयोजित इस कार्यक्रम में ''सक्सेस मंत्रसनातन, नारायणीसनातन, सनातन 2047 और भारत द ग्लोबल लीडर 2047'' सत्र हुए। प्रथम सत्र का संचालन महेन्द्र शर्मा ने किया तथा प्रखर वक्ता कपिल मिश्रा और शिक्षक राजवीर सिंह चलकोई ने संबोधित किया। द्वितीय सत्र संचालन संगीता प्रणवेन्द्र शर्मा ने किया तथा न्यूज एंकर रूबिका लियाकत, लेखिका शैफाली वैद्य एवं सहायक प्रोफेसर डॉ. अनामिका पूनियां ने संबोधित किया।

तृतीय सत्र का संचालन शिवशंकर शर्मा ने किया तथा आध्यात्मिक गुरु स्वामी दीपांकर, अधिवक्ता अश्विनी उपाध्याय एवं दलित चिंतक गुरुप्रकाश पासवान ने संबोधित किया और अध्यक्षता एसएस अग्रवाल ने की। चतुर्थ सत्र का संचालन पत्रकार प्रताप राव ने किया। सामाजिक नेता एवं लेखक राम माधवन ने संबोधित किया और अध्यक्षता युगल किशोर शर्मा ने की।

प्रथम सत्र को संबोधित करते हुए कपिल मिश्रा ने बताया कि सनातन की सफलता तभी कहलाएगी जब कोई सनातनी भूखा न सोए, हमारी बहिन बेटियां सुरक्षित रहें। अभी मस्जिद खोदकर मंदिर ढूंढने पर विवाद चल रहा है, लेकिन संभल में तो बिना खोदे ही मंदिर मिल रहा है। कांग्रेस सरकार के शासन में हमें मनगढ़ंत इतिहास पढ़ाया गया। अकबर को महान बताया, लेकिन वास्तविक नायकों को भूला दिया गया। हमें स्वावलंबी युवाओं को प्रेरित करने की आवश्यकता है।

वक्ता शिक्षक राजवीर सिंह ने कहा कि भारत के भूगोल और इतिहास का वास्तविक ज्ञान युवाओं को होना चाहिए। भगवान श्रीराम के शासन का उल्लेख करते हुए बताया कि उन्होंने अपने सीमा की रक्षा के लिए उत्तर पश्चिम सीमा पर विदेशी आक्रांताओं को रोकने के लिए चौकियों की स्थापना की, क्योंकि उन्हें पता था आक्रमण वहीं से हो सकता है। यही कार्य हमारे महान राजाओं ने किया, लेकिन इतिहास को गलत तरीके से लिखकर ऐसे राष्ट्र नायकों को भुलाया जा रहा है। द्वितीय सत्र को संबोधित करते हुए वक्ता शैफाली बैद्य ने बताया कि नारी पर अत्याचार सनातन की प्राचीन अवधारणा में कहीं नहीं था। हम अपनी ऐतिहासिक नायिकाओं को भूल चुके हैं। रुबिका लियाकत ने बताया कि सनातन सबकी परम्परा है। देश की सनातन संस्कृति में नारी का सम्मान दिखाई देता है। सनातन में धन, बुद्धि और ताकत के लिए मां लक्ष्मी, मां सरस्वती और मां दुर्गा की उपासना की जाती है। यह अर्धनारीश्वर का देश है। अहिल्या बाई होलकर की वजह से आज नारी टीका लगा पा रही है। तीर्थ दर्शन कर पा रही है।

अनामिका पूनियां ने कहा कि सनातन में तत्व की चर्चा होती है। सनातन संस्कृति में स्त्री और पुरुष में कोई भेद नहीं है। तृतीय सत्र को संबोधित करते हुए स्वामी दीपांकर ने कहा कि कुंभकर्ण के बाद सबसे अधिक सोया है तो वह हिंदू है, लेकिन अब जागने का समय है और 2047 में सनातन कैसा दिखे इसके लिए आज ही जागरूक होने की आवश्यकता है। अब भारत पर उसी का शासन होना चाहिए जो किसी जाति का नहीं बल्कि 100 करोड़ हिन्दुओं का प्रतिनिधित्व करे।

एडवोकेट अश्विनी उपाध्याय ने बताया कि हम अपनी पहचान एक हिन्दू नहीं बल्कि जाति, समुदाय, क्षेत्र और परंपरा से करते हैं। प्रोफेसर गुरुप्रकाश पासवान ने बताया कि दलितों के अधिकारों के नाम पर कई राजनीतिक पार्टियां सिर्फ अपना और अपने परिजनों का भला कर रही है। ऐसे लोग वैचारिक आतंकवादी है। चतुर्थ और समापन सत्र भारत द ग्लोबल लीडर 2047 का संचालन वरिष्ठ पत्रकार प्रताप राव ने किया, अध्यक्षता युगल किशोर शर्मा ने की और सत्र को सामाजिक नेता राम माधव ने संबोधित करते हुए स्वामी विवेकानंद और महर्षि अरविंद को कोट करते हुए कहा कि प्रत्येक राष्ट्र को अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए एक लक्ष्य निर्धारित करना होता है। भारत का भी एक लक्ष्य था, हमें उसे समझकर आगे बढ़ना था। इस लक्ष्य को जानने वाले जीवित नहीं रहे, इसलिए हम आजादी के बाद गलत राह पर चल पड़े। इसका परिणाम यह हुआ कि भारत अपने लक्ष्य की प्राप्ति में पिछड़ गया। भारत के साथ आजाद हुए या अस्तित्व में आए जापान, इजराइल, चीन आज विकसित राष्ट्र हैं। उन्होंने कहा कि 1947 में विकसित भारत लिए संगठित भारत, शक्तिशाली भारत, समृद्ध भारत बनाना जरूरी है। इस दौरान राम माधव ने शिव शंकर शर्मा द्वारा लिखित पुस्तक दिग्विजय हिंदुत्व का विमोचन भी किया।

नवोन्मेष फाउंडेशन, जयपुर के वैचारिक महाकुंभ ''टॉक फेस्ट'' को वक्ताओं ने संबोधित किया।

- **कार्यक्रम को सामाजिक नेता राममाधव, प्रखर वक्ता कपिल मिश्रा, रूबिका लियाकत एवं स्वामी दीपांकर आदि ने संबोधित किया**

राज्य के उच्च माध्यमिक स्कूलों को नए साल में व्याख्याता मिलेंगे

बीकानेर, (निसं)। राज्य के उच्च माध्यमिक स्कूलों में पढ़ने वाले 11वीं व 12वीं के विद्यार्थियों को नए साल की शुरुआत के साथ ही व्याख्याता मिल जाएंगे। माध्यमिक शिक्षा निदेशालय ने वर्ष 2021-22 और 2022-23 की डीपीसी में पदोन्नत हुए 10515 लेक्चरर की पोस्टिंग के लिए ऑनलाइन काउंसलिंग का शेड्यूल घोषित कर दिया है। काउंसलिंग की प्रक्रिया 24 दिसंबर से 15 जनवरी तक चलेगी। पदोन्नत व्याख्याता के पोस्टिंग आदेश 15 जनवरी को घोषित किए जाएंगे। इससे पूर्व 24 दिसंबर को काउंसलिंग के लिए अस्थाई वरीयता सूची जारी होगी।

अस्थाई वरीयता सूची पर संबंधित शिक्षक आपत्ति होने पर 31 दिसंबर तक अपनी आपत्ति ऑनलाइन दर्ज कर सकेंगे। आपत्तियों का निस्तारण कर 6 जनवरी को अंतिम वरीयता सूची और काउंसलिंग में शामिल होने वाले रिक्त पदों जारी किए जाएंगे। पदोन्नत व्याख्याता 7 जनवरी से 10 जनवरी तक ऑनलाइन स्कूलों का चयन एवं ऑप्शन लॉक कर सकेंगे।

- **पदोन्नत व्याख्याता 7 से 10 जनवरी तक ऑनलाइन स्कूलों का चयन एवं ऑप्शन लॉक कर सकेंगे**
- **वर्ष 2021-22 और 2022-23 की डीपीसी में पदोन्नत हुए 10515 लेक्चरर की पोस्टिंग के लिए ऑनलाइन काउंसलिंग का शेड्यूल घोषित किया**

पदोन्नत लेक्चरर की ओर से दिए गए विकल्पों के आधार पर 13 जनवरी को रिजल्ट तैयार किया जाएगा। 15 जनवरी को संबंधित लेक्चरर के पदस्थापन आदेश जारी होंगे।

ऑनलाइन काउंसलिंग का कैलेंडर घोषित करने के साथ ही माध्यमिक शिक्षा निदेशालय ने पदोन्नत व्याख्याता के यथास्थान कार्यग्रहण करने की अंतिम तिथि में भी आगामी आदेशों तक बढ़ोतरी कर दी है। पूर्व में पदोन्नत व्याख्याता को 23 दिसंबर तक वर्तमान स्थान पर कार्य ग्रहण करने के निर्देश दिए गए थे। बीकानेर माध्यमिक शिक्षा निदेशालय ने वर्ष 2023-24 की डीपीसी में चयनित डिप्टी डीईओ फिजिकल की ऑनलाइन काउंसलिंग का शिड्यूल भी घोषित कर दिया है। डीपीसी में 24 डिप्टी डीईओ फिजिकल का चयन हुआ है। पोस्टिंग के लिए यह शिक्षा अधिकारी 8-9 जनवरी को ऑनलाइन स्कूलों का चयन व ऑप्शन लॉक कर सकेंगे। इनके पदस्थापन आदेश 10 जनवरी को जारी किए जाएंगे।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

सोमवार 23 दिसम्बर, 2024

पौष मास, कृष्ण पक्ष, अष्टमी तिथि, सोमवार, विक्रम संवत 2081, उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र प्रात: 9:09 तक, सौभाग्य योग सायं 7:54 तक, कौलव करण सायं 4:08 तक, चन्द्रमा आज कन्या राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-धनु, चन्द्रमा-कन्या, मंगल-कर्क, बुध-वृश्चिक, गुरू-वृष, शुक्र-मकर, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

श्रेष्ठ चौघड़िया: अमृत सूर्योदय से 8:34 तक, शुभ 9:51 से 11:08 तक, चर 1:43 से 3:00 तक। लाभ-अमृत 3:00 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 7:30 से 9:00 तक। सूर्योदय 7:17, सूर्यास्त 5:35

मेष
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। परिवार में चल रहे आपसी वाद-विवाद समाप्त होंगे।

वृष
व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। आय में वृद्धि होगी।

मिथुन
घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक कार्य के लिए यात्रा संभव है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कर्क
मित्रों/रिश्तेदारों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। आज परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

सिंह
आर्थिक मामलों में परेशानी हो सकती है। धन हानि हो सकती है। व्यावसायिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को महत्वपूर्ण अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है।

कन्या
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। शुभ कार्य के लिए यात्रा संभव है।

तुला
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। महत्वपूर्ण मामलों में दुविधा बनी रहेगी।

वृश्चिक
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है।

धनु
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। स्वास्थ्य ठीक रहेगा।

मकर
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। शुभ कार्य के लिए यात्रा संभव है। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी।

कुंभ
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। यात्रा टालना ठीक रहेगा।

मीन
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। व्यावसायिक प्रयासों में ऊचित सफलता मिल